International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

भारत में खेल शिक्षा और शारीरिक शिक्षा का महत्व

डॉ. जिनेन्द्र बौद्ध
एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग
देवनागरी कॉलेज, मेरठ ।

सार

खेल बच्चों को फिट और स्वस्थ शरीर बनाए रखने के महत्व को सिखाते हुए अंदर से मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल शिक्षा सीधे तौर पर बच्चों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के साथ-साथ उनकी शारीरिक सहनशक्ति को बढ़ाने पर भी प्रभाव डालती है। यह मांसपेशियों की ताकत, याददाश्त, और समग्र शारीरिक समन्वय विकसित करने में मदद करता है। यह टीम भावना और समन्वय सहित कई जीवन कौशल सिखाता है। भारत सरकार ने 1984 में ही राष्ट्रीय खेल नीति बनाने के लिए युवा विकास के रूप में खेलों को अपनाने के महत्व को मान्यता दी, जिसने खेल और शारीरिक शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बना दिया। राष्ट्रीय खेल नीति 2011, बौद्धिक स्तर को बढ़ाने और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में खेल और शारीरिक शिक्षा के महत्व पर जोर देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी, ललित कला और खेल सीखने की क्षमता के साथ विज्ञान और मानविकी से विषयों को चुनने का लचीलापन छात्रों दिया होगा। छात्रों को सार्थक और सांस्कृतिक रूप से स्थित खेल अनुभव प्रदान करने में रुचि के साथ खेल और खेल-आधारित गतिविधियाँ शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा बन गई हैं। खेल शिक्षा दुनिया भर में सबसे लोकप्रिय रूप से क्रियान्वित और शोधित शैक्षणिक मॉडल में से एक है। जब खेल को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाया जाता है, तो छात्र स्वस्थ खान-पान की आदतें, हृदय संबंधी फिटनेस के बेहतर स्तर, माता-पिता के समर्थन में वृद्धि और चिंता और अवसाद के स्तर में कमी की रिपोर्ट करते हैं। एक राष्ट्रीय अध्ययन ने छात्र-एथलीटों और नशीली दवाओं, शराब और मादक द्रव्यों के सेवन में गिरावट के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध प्रदर्शित किया।

संकेत शब्द: खेल शिक्षा, बेसिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा, राष्ट्रीय खेल नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, खेल पाठ्यक्रम एवं विश्वविद्यालय ।

परिचय

खेल शिक्षा का मतलब केवल एक निर्धारित दिनचर्या को बार-बार करना या मनोरंजन के लिए कोई मनोरंजक गतिविधि नहीं है। यह आवश्यक मूल्यों, जीवन कौशल सीखने के बारे में भी है जिसे सिद्धांत रूप में पढ़ाना कठिन है। इसमें राष्ट्र के विकास को परिभाषित करने की क्षमता है। परंपरागत रूप से, खेल कभी भी सामान्य रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली का एकीकृत हिस्सा नहीं रहा हैं। भारत के अधिकांश स्कूलों और कॉलेजों को ऐसे परिदृश्य का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

सामना करना पड़ा है जब हमारी प्रिय शारीरिक प्रशिक्षण कक्षाओं को 'पाठ्यक्रम पूरा करने' के बहाने विज्ञान शिक्षक द्वारा अपहरण कर लिया गया था। साथ ही, जब घर पर खेलने की बात आई तो माता-पिता से भी ज्यादा समर्थन नहीं मिला। इस स्थिति के लिए वास्तव में जो दोषी है वह देश में शिक्षा प्रणाली की कठोर संरचना है। ऐसा नहीं है कि खेल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं हैं । वास्तव में, अधिकांश राज्य और राष्ट्रीय बोर्डों में दसवीं कक्षा के लिए खेल एक प्रमुख विषय है। हालाँकि, यहीं इसका महत्व समाप्त हो जाता है। खेल को पाठ्यक्रम में शामिल करना महज औपचारिकता के लिए है। खेल को अक्सर विद्यार्थियों के मनोरंजन के लिए एक अयोग्य अतीत-समय की गतिविधि के रूप में देखा जाता है। किसी खेल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों को अभी भी कक्षा के सबसे 'विचलित' लोगों में से एक के रूप में देखा जाता है। भारत में शिक्षा प्रणाली ने शारीरिक विकास को नजरअंदाज करते हुए छात्र के मानसिक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

खेल शिक्षा और भारत के दृष्टिकोण से इसका महत्व

खेल बच्चों में टीम भावना और समन्वय सहित कई जीवन कौशल को सिखाता है। एक अच्छे से खेले गए खेल में आत्म-प्रेरक भावना, अनुशासन, नेतृत्व, सफलता के साथ-साथ विफलताओं का स्वामित्व लेने जैसे मूल्यों को स्थापित करने की शक्ति होती है। दरअसल, खेल बच्चों को मैच हारने के बाद उठना, गलतियों से सीखना और अपने खेल में सुधार करना सिखाता है। उनका यह अदम्य, कभी न हार मानने वाला रवैया जीवन भर बना रहता है । इस प्रकार, खेल बच्चों को वयस्कता में आने वाली जीवन की चुनौतियों के लिए अच्छी तरह तैयार करते हैं। यही कारण है कि दुनिया के कुछ सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय खेल शिक्षा में उत्कृष्टता को महत्व देते हैं। इसके अलावा, नियमित रूप से खेलना छात्रों के लिए सबसे अच्छे तनाव निवारकों में से एक है। यह मन, शरीर और आत्मा को एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाने और उचित संतुलन बनाए रखने का एक महान माध्यम है और फिर, यदि कोई किसी खेल में अच्छा प्रदर्शन करता है, तो उसमें अच्छा करियर बनाने की संभावना हमेशा बनी रहती है। विश्व स्तर पर, एक उद्योग के रूप में खेल की एक एकीकृत अपील होती है। खेल उद्योग एक गतिशील आकर्षण का दावा करता है जिसे कई अन्य बड़े उद्योग ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं। इसमें राष्ट्रों को परिभाषित करने की शक्ति है। खेल बल, गति, संभावित ऊर्जा, वेग और टॉर्क जैसी वैज्ञानिक अवधारणाओं का पता लगाने का एक आदर्श अवसर प्रदान करते हैं। कई छात्रों के लिए, स्कूल में आयोजित खेल उनके शैक्षणिक और सामाजिक अनुभवों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक स्कूल के पाठ्यक्रम में खेल शामिल हैं क्योंकि वे शारीरिक स्वास्थ्य और गतिविधि के महत्व को समझते हैं।

खेलो इंडिया योजना

खेलो इंडिया योजना के तहत, सरकार खेलो इंडिया स्कूल गेम्स जैसी पहल के माध्यम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

से जमीनी स्तर पर खेलों के विकास का समर्थन कर रही है। यह कार्यक्रम देश में खेले जाने वाले सभी खेलों के लिए एक मजबूत ढांचा बनाकर और भारत को एक महान खेल देश के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से जमीनी स्तर पर भारत में खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए शुरू किया गया है। इस योजना के तहत बारह क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो खेल के बुनियादी ढांचे, प्रतिभा की पहचान, उत्कृष्टता के लिए कोचिंग, सामुदायिक खेल और प्रतिस्पर्धा संरचना और खेल अर्थव्यवस्था सहित पूरे खेल पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करेगा। स्कूल और कॉलेज ऐसे वातावरण हैं जहां युवा महत्वपूर्ण समय बिताते हैं। इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ खेल और शारीरिक शिक्षा ढांचे पर जोर देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आमतौर पर, स्कूल की एथलेटिक गतिविधियाँ युवाओं के लिए आनंददायक, पर्यवेक्षित गतिविधियाँ प्रदान करती हैं। छात्र-एथलीटों ने स्वस्थ खाने की आदतों, हृदय संबंधी फिटनेस के उच्च स्तर, माता-पिता के समर्थन में वृद्धि और चिंता और अवसाद में कमी की रिपोर्ट दी है। इसके अलावा, 2014 के एक राष्ट्रीय अध्ययन में स्कूली खेलों में भाग लेने और तंबाकू, नशीली दवाओं और शराब के उपयोग की कम दरों के बीच एक सकारात्मक संबंध दिखाया गया है। जो युवा खेलों में भाग लेते हैं, उनके अपने साथियों के मादक द्रव्यों के सेवन को अस्वीकार करने की अधिक संभावना होती है। माता-पिता की मानसिकता में एक दिलचस्प बदलाव भी देखा गया है, वे अब जागरूक हैं और शारीरिक रूप से स्वस्थ शरीर के महत्व को समझते हैं। आज की जीवनशैली का उनके बच्चों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव के एहसास ने माता-पिता को अपने बच्चों की फिटनेस के लिए विकल्पों की खोज में सक्रिय बना दिया है, वे अब अपने बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ किसी प्रकार के खेल या शारीरिक गतिविधि को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। 2017 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 60 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि भारत में खेल की तुलना में शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है। भारत में खेलों को बढ़ावा देने में शिक्षा क्षेत्र को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। खेल शिक्षा न केवल शारीरिक सहनशक्ति का निर्माण करती है बल्कि आज्ञाकारिता, दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति और अनुशासन जैसे गुण भी पैदा करती है। खेलों में शिक्षा के कुछ सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार हैं:

- बच्चों को उनके जीवन की शुरुआत में ही बाहरी गतिविधियाँ करने की आदत और संस्कृति देकर स्वस्थ जीवन शैली के लाभों से परिचित कराया जाता है ।
- प्रारंभिक चरण में खेल पाठ्यक्रम की शुरूआत भविष्य के खिलाड़ियों के लिए बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में कार्य कर सकती है ।
- यह प्राधिकरणों, महासंघों, खेल क्लबों आदि जैसे अन्य हितधारकों के साथ मिलकर एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर सकता है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

- यह प्रशिक्षकों, शारीरिक प्रशिक्षकों और खेल सुविधा संचालकों जैसे लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगा ।
- यह वंचित प्रतिभाओं के लिए छात्रवृत्ति के माध्यम से शैक्षिक अवसर प्रदान करेगा ।

खेल शिक्षा में भारत की पहल

छात्रों को सार्थक और सांस्कृतिक रूप से स्थित खेल अनुभव प्रदान करने में रुचि के साथ खेल और खेल-आधारित गतिविधियाँ शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा बन गई हैं। खेल शिक्षा दुनिया भर में सबसे लोकप्रिय रूप से क्रियान्वित और शोधित शैक्षणिक मॉडल में से एक है। युवा लोग अपने समय का एक बड़ा हिस्सा स्कूलों और कॉलेजों में बिताते हैं। इन संस्थानों में महत्वपूर्ण मात्रा में सीखना होता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ, यह महत्वपूर्ण है कि इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान खेल और शारीरिक शिक्षा को सीखने का एक सुलभ और नियमित हिस्सा बनाया जाए। यह स्वाभाविक रूप से संगठित खेलों को कई छात्रों के लिए सामाजिक और शैक्षणिक अनुभवों का एक महत्वपूर्ण घटक बनाता है। ऐसी गतिविधियाँ जो छात्रों में शारीरिक गतिविधि और व्यायाम को प्रोत्साहित करती हैं । खेल शिक्षा के कुछ अन्य लाभों में शामिल हैं-

- युवाओं को बाहरी गतिविधियों में शामिल होने की आदत और संस्कृति पैदा करके उनके जीवन की शुरुआत में ही स्वस्थ जीवन शैली के महत्व से परिचित कराना ।
- प्रारंभिक चरण में एक खेल पाठ्यक्रम की शुरूआत ताकि यह भविष्य के खिलाड़ियों और खेल उद्योग में अन्य पेशेवरों के लिए एक बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में काम कर सके।
- यह प्राधिकरणों, महासंघों, खेल क्लबों आदि जैसे अन्य हितधारकों के साथ मिलकर एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर सकता है।
- वंचित प्रतिभाओं के लिए छात्रवृत्ति के माध्यम से शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता।

जीवन कौशल, व्यक्तित्व विकास और यहां तक कि विश्वास, साझा जिम्मेदारियां और एक साथ काम करने जैसे करियर-प्रेरित गुणों के संबंध में बच्चों और युवाओं के जीवन में खेल के योगदान के बारे में बढ़ती जागरूकता ने माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। भारत में खेलों को बढ़ावा देने में शिक्षा क्षेत्र की अहम भूमिका है। खेल शिक्षा शारीरिक सहनशक्ति के निर्माण से परे दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति, अनुशासन और टीम भावना जैसे गुणों को विकसित करती है। हाल के वर्षों में, एक अनुशासन के रूप में खेल का अपनी पहले से परिभाषित सीमाओं से परे विस्तार हुआ है। यह अब केवल खिलाड़ियों और खेल खेलने तक ही सीमित नहीं है; ऐसे कई पेशे सामने आए हैं जो व्यवसाय और खेल को जोड़ते हैं। इस घटना के कारण खेल के व्यवसाय से जुड़े कई क्षेत्रों में समर्पित, कुशल पेशेवरों की मांग में वृद्धि हुई है। विश्व स्तर पर, खेल उद्योग में एक एकीकृत अपील है। यह उद्योग एक गतिशील अपील का दावा करता है जिससे दुनिया भर के अधिकांश अन्य उद्योग ईर्ष्या

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

करते हैं। यह राष्ट्रों को परिभाषित करने की शक्ति रखता है। खेल उद्योग रोजगार और राजस्व उत्पन्न करने का उत्तम अवसर प्रदान करता है और हमारे देश में इसके विकास की संभावना एक खेल राष्ट्र से बहु-खेल देश में हमारे हालिया परिवर्तन से बढ़ी है। खेल व्यवसाय और इसके परिणामस्वरूप शिक्षा अभूतपूर्व दर से बढ़ रही है, आने वाले वर्षों में इसके बढ़ने की ही उम्मीद है।

छात्रों के समग्र विकास में इसके महत्व को समझते हुए, भारत सरकार ने देश में खेल शिक्षा के विकास की दिशा में मजबूत कदम उठाए हैं। सितंबर 2017 में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने चार वर्षों की अवधि में 1,756 करोड़ की लागत से एक संशोधित खेलो इंडिया कार्यक्रम का निर्णय पारित किया। 2017-18 से 2019-20 तक, कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तिगत विकास, सामुदायिक विकास, आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए एक उपकरण के रूप में मुख्यधारा के खेल को शामिल करना है। इस योजना का उद्देश्य खेलों में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाले मेधावी व्यक्तियों को 5 लाख तक की छात्रवृत्ति प्रदान करना है। पिछले साल सरकार ने अगले साल तक सिलेबस में 50 फीसदी की कटौती करते हुए स्कूलों में गेम्स पीरियड अनिवार्य करने की घोषणा की थी। इसलिए, भारत में खेल शिक्षा को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। खेल और युवा मामलों के मंत्रालय ने पहले ही राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड के गठन के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित करने के पक्ष में निर्णय लिया है। यह समिति इस बात पर चर्चा कर रही है कि राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड को कैसे मूर्त रूप दिया जाए। मंत्रालय जल्द ही देश के लिए एक "ओलंपिक संग्रहालय" बनाने का भी इच्छुक है। इसका उद्देश्य मणिपुर राज्य में एक राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय की स्थापना और समावेश करना है, जो अपनी तरह का पहला विशेष विश्वविद्यालय है, जो राष्ट्रीय प्रशिक्षण के रूप में कार्य करने के अलावा खेल विज्ञान, खेल प्रौद्योगिकी, खेल प्रबंधन और खेल कोचिंग के क्षेत्रों में खेल शिक्षा को बढ़ावा देगा।

भारत में खेल शिक्षा पाठ्यक्रम का विकास और कार्यान्वयन

पाठ्यक्रम डिजाइन प्रक्रिया में प्रमुख हितधारकों की सक्रिय भागीदारी से देश भर में खेल शिक्षा में एक राष्ट्रीय मानक ढांचा विकसित करने में मदद मिलेगी। भारत भर में खेल शिक्षा पाठ्यक्रम का मसौदा तैयार करने, अनुमोदन करने और लागू करने के महत्वपूर्ण कार्य को प्राप्त करने के लिए प्रमुख परिणाम इन घटकों पर निर्भर करते हैं-

- मानकों का निर्माण, कम से कम 5 प्रमुख मानकों को अंतिम रूप दें जिसमें खेल कौशल, शारीरिक स्वास्थ्य और गतिविधि, प्रतियोगिताओं तक पहुंच, आवश्यक मनोसामाजिक मूल्यों और मौलिक कौशल के निर्माण से संबंधित सीखने के परिणाम शामिल हों ।
- खेल पाठ्यक्रम मानकों के निर्माण और अपनाने के लिए निश्चित समय सीमा, 2018 तक, राष्ट्रीय खेल शिक्षा मानकों का मसौदा सार्वजनिक और विशेषज्ञ चर्चा के लिए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

लाया जाना चाहिए । 2019 तक, खेल मानकों और अन्य संबद्ध जानकारी के लिए अंतिम दिशानिर्देशों को अंतिम रूप दिया जाएगा और उन्हें लागू करने के लिए तैयार किया जाएगा।

- यह स्पष्ट समझ होनी चाहिए कि एसई पाठ्यक्रम पीई पाठ्यक्रम का प्रतिस्थापन नहीं है, बल्कि बच्चों में पीई उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जबकि उनके बीच विभिन्न खेलों को व्यापक आधार दिया जा सकता है, जिससे संभवतः खेलों में संभावित उच्च प्रदर्शन प्रतिभा की पहचान और विकास हो सके।
- फोकस पोजीशन पेपर, डेटा और फीडबैक संग्रह, पाठ्यक्रम प्रारूपण प्रक्रिया की देखरेख करने वाली खेल समितियों के निर्माण को बढ़ावा देना। साथ ही, अनुमोदित समूह को मील का पत्थर पूरा करने पर अनुसंधान अनुदान स्वीकृत करना।
- एसई की भविष्य की आवश्यकताओं के साथ संरेखित करने के लिए मौजूदा कार्यबल के कौशल को बढ़ाने के लिए अपनी स्वयं की संरचना और गुणवत्ता को उन्नत करने के संदर्भ में महासंघों और शिक्षा बोर्डों से पूर्ण समर्थन।
- सरकार द्वारा बनाई गई 'खेलो इंडिया' योजना खेलों के विकास के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। स्कूलों में खेल शिक्षा की आवश्यकता को शामिल करने वाली समान योजनाओं की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा और सिफारिशों -

- अगले राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) अध्ययन और सिफारिशों के हिस्से के रूप में खेल शिक्षा को शामिल करने का लक्ष्य। इसे प्राप्त करने के लिए, कुछ स्कूलों में खेल पाठ्यक्रम ढांचे का मसौदा तैयार करना, परीक्षण करना और परीक्षण करना, उद्योग विशेषज्ञों के सुझावों के अनुसार अनुसमर्थन करना और देश भर में लागू करना महत्वपूर्ण है।
- पाठ्यक्रम के निर्माण और विकास में शामिल अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के अधिकारियों के साथ सहयोग स्थापित करें। इन देशों द्वारा स्कूलों में एसई पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों और समस्याओं को समझने से सीखने से हमें अधिक प्रभावी एसई पाठ्यक्रम मानक तैयार करने में मदद मिल सकती है।
- राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) द्वारा किए गए कौशल अंतर विश्लेषण को एसई पाठ्यक्रम से संबंधित नौकरियों में नौकरी की आवश्यकता के साथ संरेखित करें - खेल शिक्षक, खेल पाठ्यक्रम लेखक, सामुदायिक खेल अधिकारी, पाठ्यचर्या की निगरानी और अन्य प्रोफाइल के बीच मूल्यांकन - एक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पाठ्यक्रम मानक जो खेल उद्योग के लिए कौशल विकास में भी मदद करता है।

संबद्ध कार्य क्षेत्रों में मानक विकसित करें जैसे-

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

- राष्ट्रीय मूल्यांकन मानक - खेल मूल्यांकन आयोजित करने के लिए मेट्रिक्स, तरीकों, प्रक्रिया को परिभाषित करता है।
- पाठ्यचर्या की निगरानी और मूल्यांकन मानक - निरीक्षण, परिणामों और शिक्षण विधियों के उचित मूल्यांकन और सुधारात्मक कार्रवाई प्रदान करने में सहायता करता है।
- इसकी पहुंच और प्रयोज्यता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज विधियां (खेल प्रतिभा के लिए) और मानक।
- कार्यान्वयन और डेटा संग्रह प्रक्रिया की देखरेख में जिला खेल अधिकारियों (डीएसओ) की भागीदारी। पाठ्यक्रम ढांचे के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय खेल महासंघों को योजना में लाया जाएगा।
- शिक्षकों की क्षमता, प्रशिक्षण, रुचि और प्रेरणा स्तर में भिन्नता को कम करना; एक मानकीकृत रूपरेखा दस्तावेज़ होने से यह सुनिश्चित होगा कि न्यूनतम अपेक्षित परिणाम और डिलिवरेबल्स प्राप्त किए जाएं।
- भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI), राज्य स्तरीय खेल प्राधिकरण, राष्ट्रीय खेल महासंघों और उनकी राज्य इकाइयों जैसे अन्य प्रमुख हितधारकों की देखरेख और अंतर-संबंध के लिए एक राष्ट्रीय खेल शिक्षा पाठ्यक्रम प्राधिकरण (NASECA) की स्थापना। NASECA अंतर-संचालनीयता कार्यों को सुनिश्चित करेगा और स्कूलों में खेल पाठ्यक्रम के परिवर्तन और कार्यान्वयन को रचनात्मक बनाएगा।
- स्कूलों और समुदायों में खेल संस्कृति की अवधारणा को बढ़ावा देना जिससे खेल और शारीरिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को जीवन के एक तरीके के रूप में देखा जाए। स्कूल स्तर, सामुदायिक स्तर, पेशेवर स्तर और साथ ही शौकीनों के लिए पर्याप्त प्रतिस्पर्धी अवसर प्रदान करें।

प्रस्ताव और निष्कर्ष

खेल को किसी भी शैक्षणिक विषय के समान स्तर पर रखने की आवश्यकता है। यह उतनी ही ईमानदारी और ध्यान देने योग्य है। यह स्कूलों का कर्तव्य है कि वे इस महत्व को पहचानें और एक अच्छा एसई पाठ्यक्रम विकसित/क्रियान्वित करें जो छात्रों को रुचिकर लगे और माता-पिता से समर्थन प्राप्त हो। जबकि एक व्यापक स्तर की रूपरेखा सरकार द्वारा दी जानी है, स्कूलों में व्यावहारिक कार्यान्वयन की जिम्मेदारी स्कूल के नेताओं और प्रबंधन टीम की होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी, ललित कला और खेल सीखने की क्षमता के साथ विज्ञान और मानविकी से विषयों को चुनने का लचीलापन छात्रों को पहले से सामना किए गए प्रतिबंधों के बिना चुनने के लिए विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला देगा। यह सभी ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में एक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा की वकालत करता है। सभी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015

चरणों में, अनुभवात्मक शिक्षा को अपनाया जाएगा, जिसमें व्यावहारिक शिक्षा, कला-एकीकृत और खेल-एकीकृत शिक्षा, कहानी-आधारित शिक्षाशास्त्र, दूसरों के बीच, प्रत्येक विषय के भीतर मानक शिक्षाशास्त्र के रूप में और विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज शामिल है। . खेल-एकीकरण एक अन्य अंतर-पाठ्यचर्या शैक्षणिक दृष्टिकोण है जो सहयोग, आत्म-पहल, आत्म-दिशा, आत्म-अनुशासन, टीम वर्क, जिम्मेदारी, नागरिकता आदि जैसे कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए शैक्षणिक प्रथाओं में स्वदेशी खेलों सहित शारीरिक गतिविधियों का उपयोग करता है। खेल छात्रों को फिटनेस को आजीवन दृष्टिकोण के रूप में अपनाने और फिट इंडिया मूवमेंट में परिकल्पित फिटनेस के स्तर के साथ-साथ संबंधित जीवन कौशल प्राप्त करने में मदद करने के लिए कक्षा के संचालन में एकीकृत शिक्षण किया जाएगा। शिक्षा में खेलों को एकीकृत करने की आवश्यकता को अच्छी तरह से पहचाना जाता है क्योंकि यह शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देने के साथ-साथ संज्ञानात्मक क्षमताओं को भी बढ़ाकर समग्र विकास को बढ़ावा देता है। सभी छात्रों द्वारा अपनाए जाने वाले अनिवार्य कौशल - स्वास्थ्य, पोषण, शारीरिक शिक्षा, फिटनेस, कल्याण, खेल। इसके अलावा- निवारक स्वास्थ्य देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य, प्राथमिक चिकित्सा, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता में बुनियादी प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। खेल शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने के विभिन्न लाभ हैं और इसलिए राष्ट्रीय एसई पाठ्यक्रम मानक का विकास आवश्यक है और समय की मांग है। खेल पाठ्यक्रम ढांचे के कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए अनिवार्य कारण, कारक और समय देश भर में खेल प्रदर्शन में सुधार की उम्मीद के साथ पूरी तरह से मेल खाते हैं।

संदर्भ सूची

- शिंदे बस बी. एस. (1999) शारीरिक शिक्षा के मूल तत्व, नई दिल्ली भारत पब्लिकेशन ।
- डॉ सिंह नीरज प्रताप (2019) स्वास्थ्य शारीरिक शिक्षा और योग , खेल प्रकाशन दिल्ली।
- http://bweducation.businessworld.in/article/Sports-Education-An-Integral-Part-Of-The-Educational-Curriculum/30-06-2019-172551 ।
- अजमेर सिंह , बैंस जगदीश , गिल जे . एस . , बराड़ आर . एस . (2019) अनिवार्य शारीरिक शिक्षा , कल्याणी प्रकाशन दिल्ली।
- http://www.sportseed.in/wpcontent/ uploads/2018/04/White-Paper_CIISportseed_इस्टैब्लिशिंग-नेशनल-कर्रिकलम-स्टैंडर्ड्सफॉर-स्पोर्ट्स-एजुकेशन-इन-इंडिया_जून2017 ।
- चौधरी एन . वी . और आर . जैन (2012) योग स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा विश्वकोश , प्रागुन प्रकाशन नई दिल्ली ।
- कुमार अमरेश (2009) शारीरिक शिक्षा खेलकूद तथा स्वास्थ्य शिक्षा, नई दिल्ली, खेल साहित्य केंद्र 7 - 26, अंसारी रोड, दरयागंज ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|
Thomson Reuters ID: L-5236-2015